अथ बृहस्पतिवार की आरती

ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा ।
छिन छिन भोग लगाऊं फल मेवा ।।ॐ।।
तुम पूर्ण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
जगतपिता जगदीश्वर तुम सबके स्वामी ।।ॐ।।
चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता ।
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता ।।ॐ।।
तन मन धन अर्पणकर जो जन शरण पड़े ।
प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्वार खड़े ।।ॐ।।
दीन दयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी ।
पाप दोष सब हर्ता, भव बन्धन हार ।।ॐ।।
सकल मनोरथ दायक, सब संशय तारो ।
विषय विकार मिटाओ सन्तन सुखकारी ।।ॐ।।
जो कोई आरती तेरी प्रेम सहित गावे ।
जेष्टानन्द बन्द सो सो निश्चय पावे ।।ॐ।।
सब बोलो विष्णु भगवान की जय ।
सब बोलो बहृस्पति भगवान की जय ।।